

# तूबा

मासिक पत्रिका

अगस्त, 2016

اِنَّ الْمُسْلِمِينَ مَصْبَاغُ الْهُدٰى وَ سَخِيْنَةُ النَّبَاِ



# مصباح الہدی



سہ ماہی **مصباح الہدی** (اردو) کے نمبر بنئے

رجسٹرڈ ڈاک سے: ۳۰۰ روپیہ

سالانہ: ۲۰۰ روپیہ

قیمت فی شمارہ: ۶۰ روپیہ

مدیر اعلیٰ: سید منظر صادق زیدی | مدیر: سید محمد ثقلین جوراسی | نائب مدیر: وقار حیدر اعظمی



نई नस्ल  
खास तौर पर  
जवानों के लिए  
हुदा मिशन की  
हिन्दी ज़बान में  
खास पेशकश



## दोमाही मिस्बाहुल हुदा

दोमाही “मिस्बाहुल हुदा” (हिन्दी) आज ही मेम्बर बनिये और साथियों को भी बनाईये।

प्रति मैगज़ीन: 40/रुपये

सालाना: 200/रुपये

रजिस्टर्ड डाक से: 300/रुपये

मुख्य संपादक: मंज़र सादिक जैदी | संपादक: तसदीक हुसैन रिज़वी

सहायक: कुमैल असगर जैदी, अली अमीर रिज़वी

**Huda Mission**

Office : Shafaat Market  
Zehra Colony, Muftiganj, Lucknow

**हदी مشن**

آفس: شفاعت مارکیٹ زہرا کالونی مفتی گنج لکھنؤ

Mob: +91-9415090034, 9451085885, 9389830801, 9936193817



# اَلْسَّلَامُ عَلَيْكُمْ

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ مَاۢبٍ  
(عدہ ۲۹)



اگست، 2016 جلد-6، شمارہ-9

## یادگار:

مولانا **موہممد اعلیٰ آسیف** تابا سراہ

## ایڈیٹوریل بورڈ:

مولانا **تسدیق ہسین** ساہب، مولانا **سیددول حسن** ساہب

مولانا **کرمیل اسگر** ساہب

## ایڈیٹر:

سیدد مقرر سادیک جیدی

## سب ایڈیٹر:

سیدد مو0 سیبٹن باکری

## آرٹ اینڈ ڈیزائن:

imagine

We Fix Imagination

9839099435

Annual Subscription  
only Rs. 300/-

Published by:

**Huda Mission**

Head Off.: Vill. Ghazipur, P.O. Gogwan,  
Distt. Muzaffarnagar, U.P. India

Lucknow Office: Shafaat Market  
Zahra Colony, Muftiganj, Lucknow-3 (U.P.) INDIA  
Mob.: 9415090034, 9451085885

E-mail: [tubamonthly@gmail.com](mailto:tubamonthly@gmail.com)

## فہرست

1. جنت کی خدکی
2. کورانی کویج
3. ایکتیسواں سبک
4. اڈٹارہ خجڑے
5. بادام کا پڈ
6. سولہ اور دوستی
7. جیسی کرنی ویسی ہرنی
8. شہر کا اہسان (2)
9. مہری آپبیتی
10. انشا اٹلاہ







# جنت کی کھڑکی

## جنت کی کھڑکی

امام رضا علیہ السلام فرماتے ہیں:

مَنْ كَانَ مِنَّا وَلَمْ يُطِيعِ اللَّهَ فَلَيْسَ مِنَّا

جو شخص اپنے آپ کو ہم میں سے سمجھے اور خدا کی اطاعت نہ کرے وہ ہم میں سے نہیں ہے۔

جو انسان اپنے آپ کو ہم میں سے سمجھے اور خدا کی اطاعت نہ کرے وہ ہم سے نہیں ہے۔

الصَّغَائِرُ مِنَ الذُّنُوبِ طُرُقٌ إِلَى الْكِبَائِرِ

چھوٹے گناہ بڑے گناہوں کا راستہ ہیں۔

چھوٹے گناہ بڑے گناہوں کا راستہ ہیں۔

إِيَّاكُمْ وَالْحِرْصَ وَالْحَسَدَ فَإِنَّهُمَا أَهْلَكَ الْأُمَمَ السَّالِفَةَ

لاالچ اور حسد سے پرہیز کرو اس لیے کہ ان دونوں نے گزشتہ امتوں کو نابود کیا ہے۔

لالچ اور حسد سے پرہیز کرو اس لیے کہ ان دونوں نے گزشتہ امتوں کو نابود کیا ہے۔

إِيَّاكُمْ وَسُوءَ الْخُلُقِ فَإِنَّ سَيِّئَ الْخُلُقِ فِي النَّارِ لَا حَالَةَ

بداخلاقی سے پرہیز کریں اس لیے کہ بداخلاقی کا ٹھکانہ یقیناً جہنم ہے۔

بداخلاقی سے پرہیز کریں اس لیے کہ بداخلاقی کا ٹھکانہ یقیناً جہنم ہے۔

الْعِلْمُ خَزَائِنُ وَمَفَاتِيحُ السُّؤَالِ

علم خزانہ ہے اور اس کی کنجی سوال کرنا ہے۔

علم خزانہ ہے اور اس کی کنجی سوال کرنا ہے۔

لَا يَخَافُ عَبْدًا إِلَّا ذَنْبَهُ وَلَا يَزُجُّهُ إِلَّا رَبُّهُ

انسان کو صرف اپنے گناہوں سے ڈرنا چاہیے اور خدا کے علاوہ کسی سے امید نہیں کرنا چاہیے۔

انسان کو صرف اپنے گناہوں سے ڈرنا چاہیے اور خدا کے علاوہ کسی سے امید نہیں کرنا چاہیے۔







# कुआनी Quiz

## प्यारे बच्चो!

हमने आपके लिए दिलचस्प सिलसिला शुरू किया है। इस QUIZ को खुद हल करने की कोशिश करें। इस क्वीज़ को हल करने से जहाँ तुम्हारी मालूमात में इज़ाफ़ा होगा वहीं कुआनी की तिलावत का सवाब भी मिलेगा। अपने जवाबत “तूबा” के दफ़्तर रवाना करें। आप अपने जवाब ई-मेल व SMS के ज़रिये भी भेज सकते हैं। सही जवाब देने वालों को इनाम दिया जाएगा।

SMS On

09415090034, 09890500072, 09451084885

E-mail: tubamonthly@gmail.com

- 1- सूरए शम्स कौन से नम्बर का सूरा है और उसमें कितनी आयतें हैं?  
☐ (1) 91, 15    ☐ (2) 111, 5    ☐ (3) 105, 8    ☐ (4) 107, 6
- 2- बेशक तुम्हारा परवरदिगार ज़ालिमों की ताक में है किस सूरे की कौन सी आयत का तर्जुमा है?  
☐ (1) सूरए तारिक चौथी आयत    ☐ (2) सूरए बुरूज पहली आयत  
☐ (3) सूरए फज़्र चौदहवीं आयत    ☐ (4) सूरए अस्र पहली आयत
- 3- अल्लाह ने किस सूरे में आसमान और उसके बनाने वाले की कसम खाई है?  
☐ (1) सूरए मसद    ☐ (2) सूरए शम्स  
☐ (3) सूरए तारिक    ☐ (4) सूरए फज़्र
- 4- बेशक हिदायत की ज़िम्मेदारी हमारे ऊपर है। किस सूरे की कौन सी आयत का तर्जुमा है?  
☐ (1) सूरए शम्स चौथी आयत    ☐ (2) सूरए जुहा दसवीं आयत  
☐ (3) सूरए मसद दूसरी आयत    ☐ (4) सूरए लैल बारहवीं आयत
- 5- सूरए “लैल” कुआनी का कौन सा सूरा है?  
☐ (1) 115    ☐ (2) 81    ☐ (3) 92    ☐ (4) 88
- 6- खुदा ने किस सूरे में “अम्न वाले शहर की” कसम खायी है?  
☐ (1) सूरए तीन    ☐ (2) सूरए नाज़ेआत  
☐ (3) सूरए तारिक    ☐ (4) सूरए बुरूज
- 7- किस सूरे में खुदावन्द ने “नमाज से गाफिल रहने वालों की तबाही” की खबर दी है?  
☐ (1) सूरए अबस    ☐ (2) सूरए माऊन    ☐ (3) सूरए फज़्र    ☐ (4) सूरए इन्शेकाक
- 8- “जिसने कलम के ज़रिये तालीम दी है।” किस सूरे की कौनसी आयत है?  
☐ (1) सूरए तक्वीर दूसरी आयत    ☐ (2) सूरए आला दूसरी आयत  
☐ (3) सूरए अलक चौथी आयत    ☐ (4) सूरए इन्शेकाक पहली आयत

**सामने वाली तस्वीर को देखकर रंग भरो**





## इकत्तीसवां सबक़

غصہ میں معاف کرنا

गुस्से में मआफ़ करना

وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ يَغْفِرُونَ

شوریٰ-۳۷

शूरा-37

آیہ

اور جب غصہ آجاتا ہے تو معاف کر دیتے ہیں  
اور جب गुस्सा आ जाता है तो मआफ़ कर देते हैं।

ترجمہ

ترجوما





## अट्ठारह खजूरें

बसरा शहर के पास मदीने की तरफ जाने वाले रास्ते में बन्नाज नामी एक छोटा सा गाँव आबाद था इस गाँव के एक घर में अबु हबीब नाम का आदमी रहता था एक रात उसने ख़्वाब में देखा कि रसूले खुदा स०व० उसके गाँव में आये हुये हैं और मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहे हैं।

मस्जिद रास्ते में बनी हुई थी और वहाँ से गुज़रने वाला हर काफ़ेला मस्जिद के पास ठहरता और लोग मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहे थे।

अबु हबीब ने ख़्वाब में देखा कि रसूले खुदा स०व० मस्जिद में बैठे हैं और लोग आपकी ज़ियारत के लिये आ रहे हैं।

अबु हबीब ने भी हुज़ूर के पास पहुँच कर सलाम किया पैगम्बरे अकरम ने खुश होकर सलाम का जवाब दिया और पास में रखी हुई टोकरी में हाथ डाला और एक मुट्ठी ख़जूर अबु हबीब को देदी वो शुक्रिया अदा करके मस्जिद से बाहर आगया बाहर आकर उसने ख़जूरें गिनीं तो वो अट्ठारह थीं उसी वक़्त उसकी आँख खुल गई और वह अपने बिस्तर पर बैठ गया उसका ख़्याल था कि शायद अट्ठारह ख़जूरों से मुराद यह है कि मैं अट्ठारह साल तक ज़िन्दा रहूँगा या फिर उसकी ताबीर कुछ और हो।

कुछ दिन इसी तरह गुज़र गए एक दिन ज़ोहर के वक़्त एक काफ़ेला उस गाँव में आकर रुका अबु हबीब अपने बाग़ में काम कर रहा था। जब उसे मालूम हुआ कि मदीने से एक काफ़ेला आया हुआ है तो वो अपना काम छोड़कर घर वापस आया और तय्यार होकर मस्जिद चला गया पूरी मस्जिद भरी हुई थी। वह बड़ी मुश्किल से लोगों के बीच से रास्ता बनाता हुआ उस जगह पहुँचा जहाँ उसने ख़्वाब में रसूले खुदा स०व० को बैठे देखा था उस जगह पहुँच कर अबु हबीब ने देखा कि वहाँ आठवें इमाम अली रज़ा अ०स० बैठे हैं।

अबु हबीब ने आगे बैठकर सलाम किया इमाम ने मुस्कुरा कर सलाम का जवाब दिया और फिर अपने पास रखी हुई टोकरी में हाथ डालकर एक मुट्ठी ख़जूर अबु हबीब को देदीं अबु हबीब ने ख़जूरों को गिना तो अट्ठारह थीं अबु हबीब इमाम से कहने लगा। फ़रज़न्दे रसूल स०व० मुझे और ख़जूरें दीजिये।

इमाम रज़ा अ०स० ने मुस्कुराकर फ़रमाया अगर मेरे ज़द रसूले खुदा स०व० ने तुम्हें इससे ज़्यादा ख़जूरें दी होतीं तो मैं भी तुम्हें ज़्यादा दे देता।



# बादाम का पेड़

इमामे रज़ा अ०स० का काफ़ेला अब नैशापूर पहुंच चुका था लोग इमाम अ०स० का इस्तेक़बाल करने के लिये तय्यार खड़े थे हल्की हल्की हवा चल रही थी गली कूचे भी साफ नज़र आ रहे थे और तमाम लोग नये लिबास पहन कर इमाम अ०स० के आने का इन्तेज़ार कर रहे थे।

अचानक किसी की आवाज़ बुलन्द हुई कि ऊंटों की घंटियों के बजने की आवाज़ आ रही है काफ़ेला शहर में दाख़िल हो चुका है।

लोग बेताब होकर भागने लगे कुछ लोग छतों पर चढ़ गये और वहां से देखने लगे काफ़ेला शहर में दाख़िल हो चुका था और आगे बढ़ रहा था लोगों के शोर की आवाज़ सुनकर इमाम अ०स० ने परदे को हटा दिया लोग इमाम अ०स० को देखते ही दुरुद पढ़ने लगे और उन्होंने आगे बढ़कर उस ऊंट को अपने घेरे में ले लिया जिसपर इमाम अ०स० सवार थे सब बहुत खुश नज़र आ रहे थे कुछ लोग तो ऐसे थे जिनकी आँखों में खुशी से आंसू आ गये थे हर कोई चाहता था कि इमाम अ०स० के नज़दीक हो जाये और इमाम अ०स० से बात करने का मौक़ा मिल सके। इतने में शहर के बुजुर्ग लोग आगे बढ़े और इमाम अ०स० से कहने लगे ऐ मौला आप हमारे शहर में आए यह हमारी बहुत बड़ी खुशनसीबी है और हम आपकी ख़िदमत के लिये तय्यार हैं। आप हमारे घर तशरीफ़ लायें और हमें मेज़बानी का मौक़ा दें।

इमाम अ०स० ने एक नज़र डाली, उनकी निगाह एक बूढ़ी औरत पर पड़ी जो उनके दीदार के लिये आई थी और अब एक दीवार से टेक लगाए

खड़ी थी। खुशी से उसकी आँखों से आंसू जारी थे इमाम ने अपने ऊंट को उसकी तरफ़ मोड़ा और उस औरत की तरफ़ देखकर फ़रमाया, मैं उनके यहाँ रुकूंगा। ये सुनना था कि उस बूढ़ी औरत की आँखें खुशी से चमकने लगीं उसने चादर से अपनी आँखों से आंसू साफ़ किये और कहने लगी, सर आँखों पर इसर आँखों पर फ़रज़न्दे फ़ातमा स०अ० ज़रूर तशरीफ़ लाएँ।

यह कहकर बूढ़ी औरत ने आगे क़दम बढ़ा दिये इमाम उसके साथ चलते रहे बूढ़ी औरत ने अपने घर पहुँच कर दरवाज़ा खोला और इमाम अ०स० उस औरत के घर में दाख़िल हो गये इसके बाद इमाम अ०स० जितने दिन नैशापूर में रहे उसी औरत के घर में रहे। लोग ग़िरोह ग़िरोह उसके घर आकर इमाम अ०स० से मुलाक़ात करते थे।

आख़िर कार जब इमाम अ०स० के जाने का वक़्त आया तो इमाम ने बादाम का एक बीज अपनी जेब से निकाला और बूढ़ी औरत के घर के आंगन में बो दिया फिर फ़रमाया, यह बादाम का बीज फूटेगा और इससे एक बड़ा पेड़ निकलेगा यह तुम्हारे घर में मेरी यादगार है।

यह फ़रमाकर इमाम अ०स० बाहर चले गये फिर जिस तरह इमाम अ०स० ने फ़रमाया था उसी तरह हुआ उस बादाम के बीज से एक हरा भरा पेड़ निकल आया जब कभी बूढ़ी औरत को इमाम अ०स० याद आते तो वह बादाम के पेड़ की डालियों को चूमती और दुरुद भेजा करती।



# सुलह और दोस्ती

एक बार दो मुसलमानों के बीच आपस में झगड़ा हो गया। उनका झगड़ा, दूसरे आम झगड़ों की तरह दुनिया के माल की वजह से था। एक का कहना था कि उस चीज़ का मालिक मैं हूँ और दूसरा भी उसको अपनी चीज़ समझता था। उन्होंने कई बार आपस में बात चीत भी की, लेकिन अपने झगड़े को खत्म नहीं कर सके। एक दिन उन्होंने फैसला किया कि पैग़म्बर स० अ० के पास जायें और उनसे अपनी मुश्किल का हाल तलब करें।

दोनों पैग़म्बर अकरम स० अ० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और पूरी बात आपके सामने रखी ताकि आप स० अ० उनकी मुश्किल को इस्लामी क़ानून व शरीअत के मुताबिक़ हल करें और उनके बीच मौजूद झगड़ा ख़त्म हो जाये।

हज़रत मुहम्मद स० अ० ने फैसला करने से पहले उनको नसीहत की और फ़रमाया: “अगर मैं अपने फैसले में एक का माल दूसरे को दे दूँ तो लेने वाले को जानना चाहिये कि मैं ने जहन्नम की आग का एक टुकड़ा उसे दे दिया है।”

पैग़म्बर स० अ० की इस बात ने दोनों को

सोचने पर मजबूर कर दिया। अलबत्ता पैग़म्बर अकरम स० अ० हमेशा अदल व इन्साफ़ के साथ फैसला करते थे, दोनों तरफ़ की बात सुनने और सुबूत देखने के बाद ही फैसला सुनाते थे।

अल्लाह के रसूल स० अ० ने इस ताकीद के साथ उन्हें यह बात समझायी कि दूसरे लोगों के माल पर नाजाएज़ क़ब्ज़ा इन्सान को आख़ेरत में जहन्नमी बना देगा। जो इंसान दूसरों का माल ज़बरदस्ती और धोखेधड़ी से छीन ले, उसे यह नहीं समझना चाहिये कि वह कोई होशियार आदमी है, क्योंकि उसने उस काम से जहन्नम की आग जमा की है।

पैग़म्बर स० अ० की इस नसीहत ने उन दोनों के दिल में असर किया और वह कहने लगे: “ऐ खुदा के रसूल! हम जहन्नम की आग से डरते हैं और नहीं चाहते कि इस माल की वजह से एक दूसरे से लड़ाई झगड़ा करें।

नबी अकरम स० अ० ने उनको इस तरह से समझाया दोनों ने आसानी के साथ अपनी मुश्किल को हल किया और खुशी-खुशी अपने घर वापस आ गये।





# जैसी करनी वैसी भरनी

एक लोमड़ी रोज़ाना एक तालाब पर पानी पीने जाती थी। वहाँ उसकी दोस्ती एक सारस से हो गयी जब जब भी वह तालाब पर जाती कभी पानी पीने से पहले कभी पानी पीने के बाद सारस का हाल चाल पूछती सारस भी उससे बातें करता था दानों में दोस्ती बढ़ती चली गयी।

एक दिन लोमड़ी ने अपने दोस्त सारस को अपने घर दावत पर बुलाया सारस ने नये कपड़े व नये जूते पहने और ठीक वक़्त पर लोमड़ी के घर पहुँच गया जब दरवाज़े पर पहुँचा तो उसे अन्दर से अच्छे अच्छे खानों की खुशबू आई उसे ख़्याल आया कि लोमड़ी उसकी बहुत पक्की दोस्त है जब ही तो उसने अच्छे अच्छे खाने पकाये है।

जब लोमड़ी ने सारस के सामने दस्तरख़न लगाया तो सारस बहुत हैरान हुआ। बड़ी बड़ी प्लेटों में तरह तरह के खाने सजा कर रखे गए थे लेकिन सबमें केवल सालन ही सालन था। बेचारा सारस अपनी चोंच से कुछ नहीं खा सका। लेकिन लोमड़ी मजे ले ले कर सारा सालन चाट गई।

सारस समझ गया की लोमड़ी ने दोस्ती कर के उसको बेवकूफ बनाया है। सारस ने भी चलते वक़्त लोमड़ी को अपने घर आने की दावत दी। लोमड़ी ने पहले तो मना किया मगर जब सारस ने बहुत कहा तो वह मान गई। लोमड़ी सोच रही थी के सारस उसके साथ चालाकी नहीं कर पाये गा।

सारस ने भी बहुत अच्छे खाने पकाये लेकिन सारे खाने सुराही में रखे थे जिन में सारस की चोंच तो जा सकती थी लेकिन लोमड़ी का मुँह उसमे नहीं जा सकता था।

सारस अपनी लंबी गर्दन सुराही दार बर्तनों में डाल कर मजे से खाना खा रहा था और लोमड़ी बस देखे जा रही थी। इस दिन लोमड़ी भूखी घर वापस गई मगर सारस से शिकायत नहीं कर सकती थी और शिकायत करती भी तो किस मुँह से। क्यों की पहले तो उसी ने ही सारस के साथ धोका किया था। और चालाकी की थी।

इसी लिए कहा गया है की जैसा करोगे वैसा ही भरो गे।



# शेर का एहसान 2

शेर ने कहा: “ऐ भाई! इतनी जल्दी न कर मुझे कुछ और भी खिदमत करने दे। काफी दिनों पहले एक शहजादा अपने कुछ साथियों के साथ जंगल में शिकार खेलने आया था। मगर चीते और रीछ ने उन पर अचानक हमला कर दिया था। कुछ जान बचाकर भाग निकले, मगर शहजादा और उसका एक साथी मारे गये थे।

शहजादे के गले में मोतियों के हार थे। चीता और रीछ उनकी लाशों को खा रहे थे कि अचानक मेरा इधर से गुजर हो गया। मैं जो जोर से दहाड़ा तो वह डर कर भाग गये। ये हीरे मोतियों के हार मैं ले आया और अपनी गुफा में एक जगह छुपा दिये थे। यह तुम ले जाओ और बादशाह को दे देना। शायद राजा और रानी शहजादे के गम में रोते होंगे।

शेर किसान को गुफा के अन्दर ले गया और पंजे मार कर एक जगह घास में छुपे हुए हार को बाहर निकाला और किसान को दिखाते हुए कहा: “इसे तुम ले जाओ, जो

दिल चाहे करो लेकिन अगर राजा तक पहुंचा दोगे तो तुम्हे ज़्यादा इनाम मिलेगा।”

किसान ने शेर का शुक्रिया अदा किया। शेर ने कहा: “जाओ खुदा हाफिज हमेशा अच्छे रहो और नेकी करते रहना।” किसान शेर से रुखसत हो कर अपने ठिकाने पर आ गया। सुनार को उठाकर उसे जड़ी बूटी पीस कर पिला दी। कुछ देर में सुनार का बुखार खत्म हो गया और वह भलाचंगा नजर आने लगा। किसान ने उसे जब तमाम हालात बताये और शहजादे के कीमती जवाहिर के हार दिखाये तो सुनार के दिल में लालच पैदा हो गया और जवाहरात चुराने की तरकीबें सोचने लगा। खाने पीने का जखीरा मिल चुका था। इसलिए दोनों फिर शहर की तरफ चल पड़े। रास्ते में आता हुआ काफिला मिल गया और वह भी काफिले में शामिल होकर चल पड़े।

शहर के पास एक मुसाफिर खाने में ये दोनों ठहर गये। सुनार के दिल में लालच था। जैसे ही मौका मिला वह जवाहरात चुराकर भाग निकला और घर की राह ली।

इधर रानी बेटे के गम में बीमार होकर ज़िंदगी की आखरी सांसे गिन रही थी। बादशाह का ऐलान था कि जो कोई रानी

का इलाज करके उसे अच्छा करेगा, उसे आधा राज ईनाम में दे दिया जायेगा। रानी रोज़ बरोज़ मौत की तरफ़ जा रही थी। बड़े-बड़े मशहूर हकीम व डाक्टर आ रहे थे, मगर किसी से शिफा नहीं हो रही थी। किसान बादशाह के महल पहुँच गया और सिपाहियों से आने का मकसद बयान किया वह उसे बादशाह के पास ले गये।

बादशाह ने उसे ऊपर से नीचे तक देखते हुए कहा: “ऐ शख्स! यहाँ कई मुल्कों के डॉक्टर आये हैं तुम तो डॉक्टर भी नहीं लगते, कहो फिर कैसे इलाज करोगे? हम पहले ही शहजादे की जुदाई के गम में मुत्तला हैं।

किसान ने कहा: “अल्लाह आप को और रानी साहिबा को सलामत रखे। बादशाह सलामत! मायूस क्यों होते हैं। आप मुझे के पास ले चलें। इन्शा अल्लाह पहले ही खुराक से रानी साहिबा तन्दरुस्त होने लगेंगी।”

“अच्छा ये बात है तो आओ मेरे साथ।”

राजा किसान को लेकर रानी के पास आ गया। किसान ने जेब से जड़ी बूटी निकाल कर उसे पानी में घोल कर जैसे ही पिलाया, रानी के हाथ पाँव हिलने लगे और उसने आँखे खोलकर दीं। दूसरे दिन वह बात चीत करने के काबिल हो गयीं। तमाम नौकर, नौकरानियाँ और खुद बादशाह भी यह देख कर हैरान रह गये। शाम तक रानी जिसमानी तौर पर बिलकुल ठीक हो गयीं।

बादशाह ने गरीब और नादार अवाम के लिये खजाने के मुँह खोल दिये। किसान को भी आधा राज देने का ऐलान कर दिया।

किसान ने बादशाह से कहा: “आली

जाह! शहजादा शिकार के दौरान मारा गया था। फिर उसने शुरू से लेकर आखिर तक सारे हालात बादशाह से बयान करते हुए सुनार के धोके का जिक्र करते हुए बताया कि सुनार शहजादे के कीमती हार चुरा कर फरार हो गया है। गाँव में सैलाब और उससे होने वाली तबाहियों से बादशाह को आगाह करते हुए उससे मदद करने की अपील भी की।

बादशाह को सुनार की धोकेबाजी पर सख्त गुस्सा आया। उसने फौरन सिपाहियों का एक दस्ता रवाना करते हुए सुनार की फौरी गिरफ्तारी का हुक्म जारी कर दिया और गाँव वालों के लिये इमदादी सामान और मदद के लिये फौजी अलग रवाना कर दिये। सुनार को उसके घर से गिरफ्तार करके सर कलम कर दिया गया।

बादशाह ने ऐलान करते हुए गुस्से से कहा: “चोरों, लुटेरों के लिये इस मुल्क में कोई जगह नहीं है।”

बादशाह ने किसान का शुक्रिया अदा करते हुए उसे आधा राज देने की ख्वाहिश की तो किसान ने कहा: “बादशाह सलामत! आप और आपकी हुकूमत को अल्लाह सलामत रखे, आपकी जरूरत आप के मुल्क को है।”

बादशाह इस जवाब से बहुत खुश हुआ और उसे अपना बेटा बनाकर बाद में वजीरे आजम बना दिया।





# मेरी आपबीती

जब मैं और मेरे बहन भाई बड़े हुए तो हमारी गरीब मालकिन ने हमें एक आदमी के हाथ बेच दिया।

प्यारे दोस्तों! मेरा नाम हनी है। जब मैं छोटी सी थी तो एक गाँव में अपने मम्मी, पापा और बहन भाई के साथ रहती थी। हम वहाँ बहुत खुश थे। मम्मी मुर्गी के साथ हम खेतों में, गलियों में, आँगन में भागते दौड़ते रहते। ज़िन्दगी में खुशियाँ ही खुशियाँ थीं।

लेकिन दोस्तों! वक्त हमेशा कब एक सा रहता है। खुशी और ग़म का साथ हमेशा से रहा है। जब मैं और मेरे बहन भाई बड़े हुए तो हमारी गरीब मालकिन ने हमें एक आदमी के हाथ बेच दिया। उस आदमी ने हमें शहर ले जाकर मुर्गी का गोشت बेचने वाली की दुकान पर बेच डाला। यहाँ हमें एक गन्दे से दरबे में जहाँ पहले ही बहुत सारी मुर्गियाँ कैद थीं बन्द कर दिया गया।

उस तंग से गन्दे दरबे में न ढंग से खाने को मिलता न पीने को। वहाँ हमारा दम घुट रहा था। सांस लेने तक की जगह न थी वहाँ जो ताक़तवर थे कमज़ोरों को मार रहे थे। कमज़ोर कोने खुदरों में छुप रहे थे। दुकान पर कोई ग्राहक आता तो दुकान का मालिक हम में से किसी एक को पकड़ लेता। पकड़ा जाने वाला चीख़ता चिल्लाता मगर दुकानदार उसे हमारी नज़रों के सामने बेदर्री से ज़िबह कर डालता।

हम बेबसी से यह सब देखते रहते। उसका तड़पना देखते मगर कुछ न कर सकते। धीरे-धीरे मेरे सारे साथी ज़िबह हो गये। आख़िर मैं अकेली रह गयी। मैं डर रही थी। क्योंकि अब मेरी बारी थी। मुझे अपनी मम्मी, अपने बहन भाई और सहेलियाँ याद आ रही थीं। वह खेत खलियान वह आँगन जहाँ मैं हंसती खेलती

रहती थी। याद आ रहे थे मगर मैं बेबस थी। फिर दुकान में एक ग्राहक दाखिल हुआ। वह नज़रों ही नज़रों में मुझे तोल रहा था। उसने दुकानदार से कुछ कहा।

दुकानदार उठकर मेरी तरफ बढ़ा मैं डर कर एक कोने में दुबक गयी। दुकानदार ने दरबे का दरवाज़ा खोल कर हाथ आगे बढ़ाया। मैं चीखी चिल्लायी मगर उसने मुझे दबोच लिया। फिर उसने मेरे परों को बे दर्दी से मोड़कर अपने पाँव के नीचे रखा। एक हाथ से मेरा सर पकड़ा और एक लम्बी सी छुरी से मेरी गर्दन काटने की तैयारी करने लगा। उसी वक़्त एक और ग्राहक आ पहुँचा।

दुकानदार उससे बांते करने लगा, उसकी पकड़ मेरे परों पर ढीली पड़ गयी। मैंने मौक़ा ग़नीमत जाना और एक झटके से खुद को उसकी पकड़ से आज़ाद कर लिया और चीखती चिल्लाती एक तरफ़ को भाग निकली। दुकानदार मेरे पीछे भागा, लेकिन मैं उड़ती भागती दुकानदार की नज़रों से ओझल हो गयी। भागते-भागते मैं एक पार्क में जा पहुँची और झाड़ियों में खुद को छुपा लिया। मैं कितनी ही देर वहाँ छुपी रही।

फिर एक बिल्ली ने मुझे वहाँ छुपे देख लिया। वह मुझे पकड़ने के लिये लपकी मैं उससे अपनी जान बचाने के लिये भागी। पार्क में बहुत से बच्चे खेल रहे थे। उनकी मुझ पर नज़र पड़ गयी। उन्होंने बिल्ली को भगा दिया और एक बच्चा मुझे पकड़ कर अपने घर ले गया।

दोस्तों! वह बच्चा और उसके घर वाले बहुत अच्छे थे। उन्होंने मुझे दाना

खिलाया मेरे लिये लकड़ी का छोटा सा घर बना दिया। मैं भी उन्हें रोज़ाना एक अण्डा देती। फिर उन्होंने मेरे बहुत सारे अण्डे इकट्ठे कर लिये और मैं उन अण्डों पर बैठ गयी। इक्कीस बाईस दिन बाद अण्डों से छोटे-छोटे प्यारे-प्यारे बच्चे निकल आये। मैं उन बच्चों को देख कर बहुत खुश होती। वह लड़का और सब घर वाले भी मेरे नन्हें-नन्हें बच्चों को देख कर बहुत खुश हुये।

दोस्तों! अब मेरे बच्चे घर में भागते दौड़ते रहते हैं। मैं उनकी प्यारी-प्यारी शरारतों से खुश होती हूँ और उन का बहुत ख़्याल रखती हूँ क्योंकि बिल्लियाँ और चील कौव्वे मेरे नन्हें-नन्हें बच्चों के दुश्मन हैं। उस वक़्त भी एक चील उड़ती हुयी उस तरफ़ आ रही है। मुझे उससे अपने बच्चों की हिफाज़त करनी है।

इस लिये दोस्तों!

खुदा हाफिज़!



ہوں۔ کئی سال سے تجارت کر رہا ہوں لیکن ابھی تک کبھی مجھے کوئی نقصان نہیں ہوا ہے میں جو بھی کام کرتا ہوں اس میں مجھے بہت فائدہ ہوتا ہے۔ اس لئے میں سوچ میں پڑ گیا اور میرے ذہن میں یہ سوال پیدا ہوا کہ یہ فائدہ جو مجھے ہوتا ہے یہ میرے محنت اور عقلمندی کی وجہ سے ہے یا خداوند عالم نے میری تقدیر میں لکھ دیا ہے کہ مجھے فائدہ ہو۔ اسی وجہ سے میں نے بیوقوفی والی تجارت کرنے کا فیصلہ کیا ہے تاکہ اگر مجھے اس میں بھی فائدہ ہو تو میں سمجھ جاؤں گا کہ خداوند عالم نے ہی میری تقدیر ہی میں فائدہ لکھ دیا ہے اور اس میں میری محنت اور ذہانت کا کوئی رول نہیں ہے۔

حاکم بصرہ نے تعجب سے پوچھا "یعنی یہ کہنا چاہتے ہو کہ تم جس بھی کام میں ہاتھ لگاتے ہو اس میں تمہیں فائدہ ہوتا ہے؟"



تاجر نے کہا: ہاں جناب اگر میں مٹی میں بھی ہاتھ لگاتا ہوں تو وہ سونا ہو جاتی ہے۔ یہی چیز میرے لئے سوال کا سبب ہے۔ یہ کہہ کر اس تاجر نے زمین کی طرف جھک کر ایک مٹی خاک اٹھائی اور حاکم کے سامنے لیکر آیا۔

حاکم بصرہ جو کہ بہت غور سے تاجر کی باتیں سن رہا تھا۔ اچانک اس نے اپنی آنکھی اس تاجر کی مٹی کی طرف گڑا دیں اور اپنے تخت سے نیچے اتر آیا اور مسلسل اس کی مٹی کی طرف دیکھ جاتا تھا پھر اس نے تاجر کے ہاتھ میں موجود مٹی میں کچھ دیکھا اور زور سے چلایا: میری انگوٹھی! میری انگوٹھی مل گئی۔

یہ خبر بہت تیزی سے فوجیوں کے درمیان پھیل گئی۔ فوجی بھی اپنی تلواروں اور نیزوں کو ہوا میں ہلا کر خوشی کا اظہار کرنے لگے۔ حاکم کے ساتھی اور وزیر بھی اس کو انگوٹھی ملنے کی مبارکباد دینے لگے۔

تاجر یہ سارا منظر تعجب سے دیکھ رہا تھا۔ کچھ دیر بعد جب یہ ہنگامہ کچھ کم ہوا تو حاکم بصرہ خوشی سے تاجر کی طرف دیکھتا ہوا بولا: کئی دنوں سے میرے فوجی اس ریگستان میں میری انگوٹھی ڈھونڈ رہے تھے لیکن تم نے اس کو ڈھونڈ نکالا۔

تاجر جو کہ اب یہ سمجھ گیا تھا کہ کیا ماجرا تھا اور یہ فوجی کیا ڈھونڈ رہے تھے۔ بولا: لیکن جناب میں آپ کی انگوٹھی نہیں ڈھونڈ رہا تھا بلکہ میں نے تو آپ کو دکھانے کے لئے مٹی اٹھائی تھی



حاکم نے کہا: سمجھ گیا لیکن تم نے اپنے اس کام سے اپنے سوال کا جواب پالیا۔ تاجر نے تعجب سے پوچھا! کیسے؟ حاکم نے جواب دیا: میرے فوجی کئی دنوں سے بھوکے ہیں اور انہوں نے کچھ نہیں کھا یا ہے۔ کیونکہ میرا اس ریگستان میں رکنے کا ارادہ نہیں تھا اس لئے اپنے ساتھ کچھ کھانے کا سامان نہیں لایا تھا۔ اب میں تمہاری ساری کھجوریں خرید لوں گا۔ اور چونکہ تم نے میری انگوٹھی ڈھونڈی ہے اس لئے میں تم کو اس کھجور کی کئی گنا قیمت دوں گا۔

تاجر! کہ جس نے اس تجارت میں بھی بہت زیادہ فائدہ اٹھایا تھا۔ سجدہ میں گر گیا اور خداوند عالم کی بارگاہ میں کہنے لگا: اے خداوند عالم، تیرا شکر ادا کرتا ہوں۔ اب میں یہ جان گیا ہوں کہ پچھلے برسوں میں جو بھی فائدہ مجھے ہوا ہے صرف تیرے کرم سے ہوا تو نے ہی میری تقدیر میں لکھ دیا ہے جس کی بنا پر میں اتنا مالدار ہو گیا ہوں۔







## خوش قسمت تاجر (۲)

اس خیمے کے سامنے لال رنگ کا قیمتی قالین بچھا ہوا تھا جس کے اوپر ایک بہت بڑا تخت شاہی رکھا ہوا تھا جس پر ایک موٹا آدمی جسکی بڑی بڑی مونچھیں تھیں اور بہت اچھا اور قیمتی لباس پہنے ہوئے تھا، ٹیک لگا کر بیٹھا ہوا تھا۔ اس آدمی کے سامنے پھلوں سے بھری ٹوکری جس پر سونے اور جواہرات جڑے ہوئے تھے رکھے ہوئے تھے۔ یہ منظر دیکھنے کے بعد تاجر کو کچھ اطمینان ہوا کہ وہ بصرہ کا حاکم ہی ہے۔ جب وہ لوگ خیمے کے پاس پہنچ گئے تو اس تاجر کے قافلے کو لانے والا فوجی اپنے گھوڑے سے اترا اور اس تخت پر بیٹھے ہوئے آدمی کے

سامنے تعظیماً جھکا اور ادب سے کہنے لگا: جناب اس قافلے کو آپ کی خدمت میں لیکر آیا ہوں، پھر وہ کنارہ جا کر ایک طرف کھڑا ہو گیا۔  
جب تاجر نے یہ سب دیکھا تو وہ بھی اس آدمی کے سامنے تعظیماً جھکا اور کہا:

سلام ہو بصرہ کے عظیم حاکم پر، پھر سر جھکا کر کھڑا ہو گیا۔  
حاکم بصرہ نے اپنی مونچھوں پر ہاتھ پھیرتے ہوئے کہا: تم کون ہو اور یہاں کیا کر رہے ہو؟ تاجر نے کہا: جناب میں ایک ایرانی تاجر ہوں اور بصرہ کی طرف جا رہا ہوں۔ حاکم نے کہا: کیا چیز بصرہ لے جا رہے ہو؟ تاجر نے دھیرے سے کہا بھجوریں، یہ سننے کے بعد وہ حاکم سیدھا ہو کر بیٹھ گیا اور غصہ سے بولا مجھ سے جھوٹ بول رہے ہو۔؟ لگتا ہے کچھ اور لے جا رہے ہو اور مجھ سے چھپا رہے ہو۔ کیا تم چاہتے ہو کہ میں فوجیوں کو حکم دوں کہ تمہارے سامان کی تلاشی لیں؟

حاکم بصرہ کے غصہ کو دیکھ کر تاجر ڈرتے ہوئے دھیرے سے بولا جناب میں نے کوئی جھوٹ نہیں بولا۔ اگر آپ چاہیں تو میرے سامان کی تلاشی لے سکتے ہیں۔ حاکم بصرہ تاجر کی باتوں کو سن کر کچھ دیر خاموش رہا۔ پھر زور سے ہنسا،

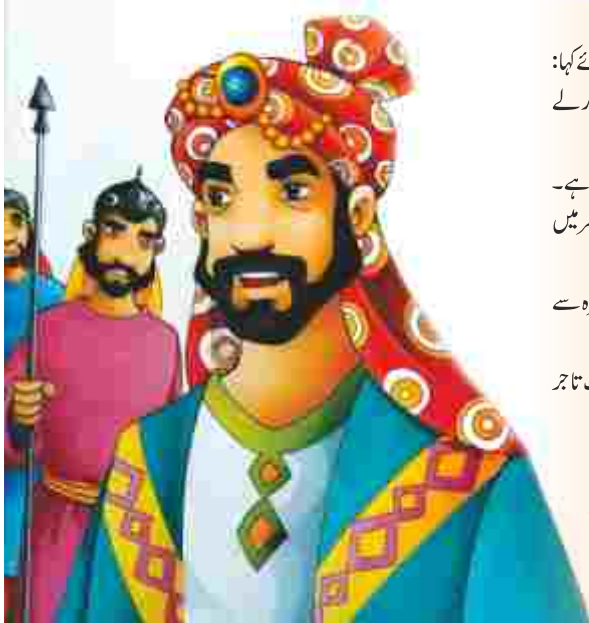


اس کو ہنستا دیکھ کر وہاں پر موجود دوسرے لوگ بھی ہنسنے لگے۔ حاکم نے ان لوگوں کی طرف دیکھتے ہوئے کہا: یہ آدمی پاگل ہے تاجر نہیں ہو سکتا۔ پھر تاجر کی طرف دیکھتے ہوئے کہا: آخر کون ایسا احمق ہے جو بصرہ کھجور لے کر جائے گا؟

تاجر نے جو کہ سر جھکائے کھڑا تھا کہا: جناب حاکم، میں نے یہ کام صرف امتحان لینے کے لئے کیا ہے۔ یہ سننے کے بعد حاکم پھر ہنسنے لگا اور کہا: یعنی تم اتنے پاگل ہو کہ تم کو یہ بھی نہیں پتہ کہ بصرہ سے دنیا بھر میں کھجوریں جاتی ہیں؟

تاجر نے کہا: جناب میں جانتا ہوں کہ بصرہ کھجور برآمد کرنے والا شہر ہے اور زیادہ تر جگہوں پر بصرہ سے ہی کھجوریں جاتی ہیں۔ لیکن میرا مقصد لچہ اور تھا۔

حاکم سوچ میں پڑ گیا اور پوچھا کس ارادہ سے؟ تاجر نے کہا: جناب حاکم، میں ایک کامیاب تاجر





एक रात सोने से पहले हाजी नसीरुद्दीन ने अपनी बीवी से कहा कल मैं अपने अंगूर के बाग में काम करूँगा बीवी को याद आया कि किसी काम को करने से पहले इन्शा अल्लाह कहना ज़रूरी और बरकत वाला होता है इस लिये उसने कहा, तुम्हारा मतलब है कि तुम इन्शा अल्लाह कल अंगूर के बाग में काम करोगे, हाजी ने जवाब दिया, नहीं बात बस इतनी सी है कि अंगूर के बाग में काम करूँगा, बीवी ने पूछा, हाजी अगर पानी बरसने लगा तो फिर क्या करोगे। उसने जवाब में कहा कोई बात नहीं अगर बारिश होने लगी तो मैं जंगल लकड़ियाँ काटने चला जाऊँगा, बीवी जल्दी से बोली अगर अल्लाह ने चाहा तो। हाजी नसीरुद्दीन चिढ़ कर बोला तुम मेरी बात ठीक से सुनो कल अगर सूरज निकला रहा तो मैं बाग में काम करूँगा और अगर पानी बरसने लगा तो जंगल जाकर लकड़ियाँ काटूँगा बीवी ने मिन्नत भरे लहजे में कहा। अरे हाजी खुदा के लिये इन्शा अल्लाह कहा करो ऐसा ना हो तुम किसी मुसीबत में फंस जाओ ये सुनकर हाजी हँस पड़ा और बोला देखो मैं हाजी हूँ और तुम एक मामूली औरत हो, अल्लाह का मामला मुझपर छोड़ो। ये कहकर नसीरुद्दीन सो गया।

दूसरे दिन सुबह से ही बारिश होने लगी हाजी नसीरुद्दीन ने अपनी बीवी से कहा ठीक है अब मैं जंगल, लकड़ियाँ काटने जा रहा हूँ बीवी जल्दी से बोली इन्शा अल्लाह हाजी चीख कर बोला अल्लाह चाहे या ना चाहे मैं तो आज जंगल जाकर लकड़ियाँ काटूँगा यह कहकर उसने अपनी कुलहाड़ी उठाई और नाश्ते का सामान अपने थैले में रखकर जंगल की तरफ रवाना हो गया और वहा पूरा दिन लकड़ियाँ काटता रह। जब शाम हुई तो वो लकड़ियों का गट्टर उठा कर घर चलने के लिये तैयार हुआ उसी वक्त उसने राजा के चार सिपाहियों को अपनी

तरफ आते देखा उनमें से एक ने उससे कहा कि तुम हमारे साथ चलकर आगे गाँव का रास्ता बता दो हाजी ने कहा कि मुझे घर जाने की जल्दी है इस लिये मैं आपकी मदद नहीं कर सकता ये सुनकर सिपाही ने उसकी तरफ गुस्से से देखा और कहा अच्छा तुम्हारे पास वक्त नहीं मगर तुमको रास्ता बताने के लिये हमारे साथ चलना ही होगा और हाँ ये हमारा सामान भी तुम्हीं उठाओगे उसी वक्त चारों सिपाहियों ने उसके सरपर अपना सामान लाद दिया बेचारे हाजी को उनका हुक्म मानना ही पड़ा और वो अपनी लकड़ियों के गट्टर को छोड़ कर गाँव की तरफ चलने लगा सिपाही उसके पीछे पीछे हँसते, बोलते चल रहे थे थोड़ी देर बाद एक सिपाही ने अपनी नोक दार उँगली उसकी पीठ में भोकते हुए कहा तेज़ तेज़ चलो। हमें जल्दी है सड़क गीली और कीचड़ से भरी थी और बारिश भी हो रही थी बेचारा हाजी तीन चार बार फिसल कर कीचड़ में गिरा सिपाही उसे देखकर हँसने लगे आखिरकार गाँव आ गया और सिपाहियों ने अपना सामान उतार कर हाजी को घर जाने की इजाज़त दे दी।

वो तेज़ तेज़ कदमों से अपने घर की तरफ रवाना हुआ और रास्ते भर अपने को कोसता रहा कि उसने इन्शा अल्लाह क्यों नहीं कहा था जिसकी वजह से उसको ये मुसीबत उठाना पड़ी।

जब वो घर पहुँचा तो बुरी तरह भीगा हुआ था और उसे सर्दी और थकन भी बहुत लग रही थी घर का दरवाज़ा खोलने लगा तो उसे पता चला कि दरवाज़ा अन्दर से बन्द है, मजबूर होकर वह दरवाज़ा खट खटाने लगा उसकी बीवी ने ऊपर कमरे की खिड़की से झाँक कर पूछा कौन है ? हाजी ने जवाब दिया मैं हूँ हाजी नसीरुद्दीन।

इन्शा अल्लाह दरवाज़ा खोलो।

# لطیفے لطیفے

ایک بیوقوف دوسرے سے: ”بھائی میرے سر میں درد ہو رہا ہے۔“

دوسرا بولا: ”میرے گلے میں درد ہو رہا ہے۔“

پہلا بولا: چلو ٹھیک ہے ہم ایک دوسرے کی مدد کرتے ہیں

”تم میرا سر دباؤ، میں تمہارا گلا دباتا ہوں۔“



ایک آدمی جس کا نام ”زخمی“ تھا وہ کسی کام سے ایک دوسرے آدمی کے گھر گیا،

دروازہ پر پہنچ کر گھنٹی بجائی تو اندر سے آواز آئی: ”کون؟“ اس آدمی نے

جواب دیا: ”جی میں زخمی ہوں۔“ اندر سے آواز آئی: ”بھائی اسپتال آگے ہے جلدی سے جائیے۔“



دو پاگل کسی مسجد کے پاس سے گزر رہے تھے ایک نے کہا: ”بھائی اللہ کا گھر دھوپ میں پڑا ہے آؤ اسے چھاؤں میں کر دیں۔“

دونوں مل کر زور لگانے لگے یہاں تک کہ شام ہو گئی اور سورج غروب ہو گیا۔

یہ دیکھ کر دونوں پاگل بہت خوش ہوئے۔ اور ایک دوسرے سے کہنے لگے: ”۔۔۔“

بھائی آج تو ہم نے نیکی کا کام کیا ہے کہ مسجد کو اٹھا کر چھاؤں میں کر دیا ہے۔“



دو بندر ایک کشتی پر سوار تھے ایک نے کہا: ”بھائی کشتی کچھ ڈمگ رہی ہے، مجھے لگتا ہے کہ کہیں ڈوب نہ جائے۔“

”دوسرے بندر نے جواب دیا: ”ڈوب جائے تو اچھا ہے۔ کج کشتی والے نے کرایہ بہت زیادہ لیا ہے۔“

کم سے کم کچھ تو اس کا نقصان ہو۔“



ایک دفعہ ایک ندی میں ایک ہاتھی نہار ہاتھا کہ اچانک کنارے پر چوہا آیا اور ہاتھی کو باہر آنے کا اشارہ کیا۔

ہاتھی باہر آیا تو چوہے نے کہا: ”بس ٹھیک ہے اب واپس جاسکتے ہو۔“ ہاتھی نے پوچھا: ”یہ کیا بات ہوئی تم نے مجھے کیوں بلایا تھا؟“

چوہا بولا: ”کچھ نہیں بات یہ ہے کہ میری نیکر کھو گئی ہے اس لئے میں یہ دیکھ رہا تھا کہ

کہیں تم میرا نیکر پہن کر تو نہیں نہار رہے ہو؟“





## جیسی کرنی ویسی بھرنی

سالن ختم کر گئی۔

سارس سمجھ گیا کہ لومڑی نے دوستی کے نام پر اس سے مذاق کیا ہے۔ سارس نے چلتے وقت لومڑی کو اپنے گھر آنے کی دعوت دی۔ لومڑی نے پہلے تو انکار کیا مگر سارس نے بہت زیادہ ضد کی تو وہ مان گئی۔ لومڑی سوچ رہی تھی کہ سارس اس کے ساتھ چالاکی نہیں کر سکے گا۔

سارس نے بھی دعوت کا انتظام بہت اچھا کیا اور طرح طرح کے کھانے بنوائے مگر سارس نے سب چیزیں "صرافی دار" برتنوں میں رکھیں تھیں جن میں سارس کی چونچ تو آسانی کے ساتھ جاسکتی تھی لیکن لومڑی کا منہ اس میں نہیں جاسکتا تھا۔ سارس اپنی لمبی گردن صراحی دار برتنوں میں ڈال کر مزے سے کھانا کھا رہا تھا اور لومڑی بس دیکھ رہی تھی۔

اس دن لومڑی بھوکے گھر واپس گئی مگر سارس سے شکایت نہیں کر سکتی تھی اور شکایت کرتی بھی تو کس منہ سے۔ کیونکہ پہلے تو اسی نے سارس کے ساتھ دھوکہ کیا تھا اور چالاکی کی تھی۔ اسی لئے کہا گیا ہے کہ ”جیسا کرو گے ویسا بھرو گے“

ایک لومڑی روزانہ ایک تالاب پر پانی پینے جاتی تھی وہاں اس کی دوستی ایک سارس سے ہو گئی جب جب وہ تالاب پر جاتی کبھی پانی پینے سے پہلے اور کبھی پانی پینے کے بعد سارس کا حال چال پوچھتی۔ سارس بھی اس سے باتیں کرتا، یوں دونوں میں دوستی بڑھتی چلی گئی۔

ایک روز لومڑی نے اپنے دوست سارس کو اپنے گھر دعوت پر بلایا۔ سارس نے نئے کپڑے، نئے جوتے پہنے اور ٹھیک وقت پر لومڑی کے گھر پہنچ گیا۔ جب دروازے پر پہنچا تو اسے اندر سے مزے دار کھانوں کی خوشبو آئی اس نے سوچا کہ لومڑی اس کی بہت پکی دوست ہے تھی تو اس نے اچھے اچھے کھانے پکائے ہیں۔

جب لومڑی نے سارس کے سامنے کھانے پیش کئے تو سارس بہت حیران ہوا۔ سب کھانے چوڑی چوڑی پلیٹوں میں رکھے گئے تھے اور سب کے سب صرف شوربے ہی شوربے تھے۔ بے چارہ سارس اپنی چونچ سے کچھ بھی نہیں کھا سکا۔ لیکن لومڑے مزے سے چاٹ چاٹ کر سارا



# دین کی قیمت

سبزی بیچنے والے سے کہا: "اس موتی کی قیمت بتاؤ"  
اس نے کہا کہ تم اس کے بدلے یہاں سے دو تین  
لیموں اٹھاؤ۔ اس موتی سے میرے بچے کھیلیں گے۔  
وہ بچہ استاد کے پاس آیا اور کہا: اس موتی کی قیمت  
دو یا تین لیموں ہے۔  
استاد نے کہا:

اچھا اب تم اس کی قیمت سنار سے معلوم کرو۔ وہ سنار  
کے پاس گیا اور پہلی ہی دکان پر جب اس نے موتی دکھایا  
تو دکاندار حیران رہ گیا۔

اس نے کہا اگر تم میری پوری دکان بھی لے لو تو بھی  
اس موتی کی قیمت پوری نہ ہوگی۔  
طالب علم نے اپنے استاد کے پاس آکر مارجا اٹھایا۔  
استاد نے کہا:

بیٹا! ہر چیز کی قیمت اس کی منڈی میں لگتی ہے۔ دین  
کی قیمت اللہ کی منڈی میں لگتی ہے۔ اس قیمت کو اہل علم  
ہی سمجھتے ہیں۔ جاہل کیا جانے دین کی قیمت کیا ہے۔

ایک استاد اپنے شاگردوں سے اکثر کہا کرتے  
تھے کہ "یہ دین بڑا قیمتی ہے۔"

ایک دن ایک طالب علم کا جوتا پھٹ گیا۔ وہ موچی  
کے پاس گیا اور کہا: "میرا جوتا ٹھیک کر دو اس کے بدلہ  
میں تمہیں دین کا ایک مسئلہ بتاؤں گا۔"

موچی نے کہا: اپنا مسئلہ رکھو اپنے پاس۔ مجھے پیسے دو۔  
طالب علم نے کہا: میرے پاس پیسے تو نہیں ہیں۔  
موچی کسی صورت نہ مانا اور بغیر پیسے کے جوتا نہیں سلا۔  
طالب علم اپنے استاد کے پاس گیا اور سارا واقعہ  
سن کر کہا:

لوگوں کے نزدیک دین کی قیمت کچھ بھی نہیں  
ہے جناب۔

استاد عقل مند تھے: طالب علم سے کہا:  
اچھا تم ایسا کرو: میں تمہیں ایک موتی دیتا ہوں تم  
سبزی منڈی جا کر اس کی قیمت معلوم کرو۔  
وہ طالب علم موتی لے کر سبزی منڈی پہنچا اور ایک

نے میرے بہت سارے انڈے اکٹھے کر لیے اور میں ان انڈوں پر بیٹھ گئی۔ اکیس بائیس دن بعد انڈوں سے چھوٹے چھوٹے پیارے پیارے چوزے نکل آئے۔ میں ان چوزوں کو دیکھ کر بہت خوش ہوئی۔ وہ لڑکا اور سب گھر والے بھی میرے ننھے منے بچوں کو دیکھ کر بہت خوش ہوئے۔

دوستو! اب میرے بچے گھر میں بھاگتے دوڑتے رہتے ہیں۔ میں ان کی پیاری پیاری شرارتوں سے خوش ہوتی ہوں اور ان کا بہت خیال رکھتی ہوں کیوں کہ بلیاں اور چیل کوٹے میرے ننھے بچوں کے دشمن ہیں۔ اس وقت بھی ایک چیل اڑتی ہوئی اس طرف آرہی ہے۔ مجے اس سے اپنے بچوں کی حفاظت کرنی ہے۔ اس لئے دوستو! خدا حافظ۔

میں ڈر کر ایک کونے میں دبک گئی۔ دکان دار نے وڑبے کا دروازہ کھول کر ہاتھ آگے بڑھایا۔ میں چیچی چلائی مگر اس نے مجھے دبوچ لیا۔ پھر اس نے میرے پروں کو بے دردی سے موڑ کر اپنے پاؤں کے نیچے رکھا۔ ایک ہاتھ سے میرا سر پکڑا اور ایک لمبی سی چھری میری گردن کاٹنے کی تیاری کرنے لگا۔

اسی وقت ایک اور گا ہک آن پہنچا۔ دکان دار اس سے باتوں میں مصروف ہو گیا۔ اس کی گرفت میرے پروں پر ڈھیلی پڑ گئی۔ میں نے موقع غنیمت جانا اور ایک جھٹکے سے خود کو اس کی گرفت سے آزاد کرالیا اور چیچی چلاتی ایک طرف کو بھاگ نکلی۔ دکان دار میرے پیچھے بھاگا، لیکن میں اڑتی بھاگتی دکان دار کی نظروں سے اوجھل ہو گئی۔ بھاگتے بھاگتے میں ایک پارک میں جا پہنچی اور جھاڑیوں میں خود کو چھپا لیا۔ میں کتنی ہی دیروہاں چھپی رہی۔ پھر ایک بلی نے مجھے وہاں چھپے دیکھ لیا۔ وہ مجھے پکڑنے کیلئے لپکی میں اس سے اپنی جان بچانے کے لئے بھاگی۔ پارک میں بہت سے بچے کھیل رہے تھے۔ ان کی مجھ پر نظر پڑ گئی۔ انھوں نے بلی کو بھگا دیا اور ایک بچہ مجھے پکڑ کر اپنے گھر لے گیا۔

دوستو! وہ بچہ اور اس کے گھر والے بہت اچھے تھے۔ انھوں نے مجھے دانا کھلایا میرے لیے لکڑی کا چھوٹا سا گھر بنا دیا۔ میں بھی انھیں روزانہ ایک انڈا دیتی۔ پھر انھوں



# میری آپ بیتی



طاقت ور تھے کم زوروں کو مار رہے تھے۔ کم زور کو نے کھدروں میں چھپ رہے تھے۔ دکان پر کوئی گاہک آتا تو دکان کا مالک ہم میں سے کسی ایک کو پکڑ لیتا۔ پکڑا جانے والا چیختا چلاتا مگر دکان دار اسے ہماری نظروں کے سامنے بے دردی سے ذبح کر ڈالتا۔ ہم بے بسی سے یہ سب دیکھتے رہتے۔

اس کا تڑپنا دیکھتے مگر کچھ نہ کر سکتے۔ آہستہ آہستہ میرے سارے ساتھی ذبح ہو گئے۔ آخر میں اکیلی وہ گئی۔ میں ڈر رہی تھی۔ کیوں کہ اب میری باری تھی۔ مجھے اپنی ماما، اپنے بہن بھائی اور سہیلیاں یاد آرہی تھیں۔ وہ کھیت کھلیاں وہ آنگن جہاں میں ہنسی کھیلتی رہتی تھی۔ یاد آرہے تھے مگر میں بے بس تھی۔ پھر دکان میں ایک گاہک داخل ہوا۔ وہ نظروں ہی نظروں میں مجھے تول رہا تھا۔ اس نے دکان دار سے کچھ کہا۔ دکان دار اٹھ کر میری طرف بڑھا

پیارے دوستو! میرا نام ہینی ہے۔ جب میں چھوٹی سی تھی تو ایک گاؤں میں اپن ماما، پاپا اور بہن بھائیوں کے ساتھ رہتی تھی۔ ہم وہاں بہت خوش تھے۔ ماما مرغی کے ساتھ ہم کھیتوں میں، گلیوں میں، آنگن میں بھاگتے دوڑتے رہتے۔ زندگی میں خوشیاں ہی خوشیاں تھیں۔

لیکن دوستو؟ وقت سدا کب ایک سار ہوتا ہے۔ خوشی اور غم کا ساتھ ہمیشہ سے رہا ہے۔ جب میں اور میرے بہن بھائی بڑے ہوئے تو ہماری غریب مالکن نے ہمیں ایک شخص کے ہاتھ فروخت کر دیا۔ اس شخص نے ہمیں شہر لے جا کر مرغی کا گوشت بیچنے والے کی دکان پر بیچ ڈالا۔ یہاں ہمیں ایک گندے سے ڈبے میں جہاں پہلے ہی بہت ساری مرغیاں قید تھیں بند کر دیا گیا۔ اس تنگ سے گندے ڈبے میں نہ ڈھنگ کے کھانے کو ملتا نہ پینے کو۔ وہاں ہمارا دم گھٹ رہا تھا۔ سانس لینے تک کی جگہ نہ تھی وہاں جو

# خوشبو والالباس

متوجہ ہو گیا۔ امامؑ نے اسے تسلی دی۔ گریہ کی وجہ سے ریان زبان سے کچھ بول نہیں سکتا تھا۔ اسکی آواز بھرا گئی تھی۔ اس نے ایک بار پھر امامؑ کے ہاتھوں کا بوسہ لیا اور وہاں سے چل پڑا۔ واپس مڑ کر امامؑ کی طرف دیکھا تو امامؑ بھی غمگین نظر آئے۔ ریان پر دوبارہ گریہ طاری ہو گیا لیکن وہ رکا نہیں اور تیزی سے اپنے اونٹ کی طرف بڑھا۔ اسی اثنا میں اسے ایک آواز سنائی دی۔ یہ مہربان آواز امام رضاؑ کی تھی

۔۔۔۔۔ ریان ۔۔۔۔۔ جی مولا

واپس آؤ

ریان حیران ہو کر واپس پلٹا اور پوچھنے لگا مولیٰ کیا حکم ہے؟  
 اماں نے فرمایا: کہا تمہیں اچھا نہیں لگتا کہ میں تمہیں کچھ  
 درہم دوں تاکہ تم اپنی بیٹی کے لئے انگوٹھی خرید سکو! کیا میں تمہیں  
 اپنا ایک لباس نہ دوں!

ریان کو اپنی حاجتوں کا خیال آگیا۔ حیران و پریشان تھا۔ وہ اپنے دل کی خواہش کو زبان پر نہیں لایا تھا۔ اماں کو اس کی کیسے خبر ہو گئی۔

کانپتی آواز میں امام سے کہنے لگا۔ میرے دل میں خواہش تھی لیکن وداع کے وقت ذہن سے نکل گئی۔ آپ سے جدائی کا مسئلہ اتنا سنگین تھا کہ میرے ذہن سے ہر چیز محو ہو گئی تھی۔ امام ریان کو لیکر کمرے میں آئے اس کو تیس درہم اور ایک سفید لباس عطا کیا۔ اور اسے رخصت کیا۔

ریان جب امامؑ سے دور ہونے لگا تو بڑے شوق و ذوق سے امام کے دئے ہوئے لباس کو چومنے لگا اور کہنے لگا۔  
”میرے اچھے مولا اپنے چاہنے والوں کے دلوں میں  
چھپے رازوں سے بھی آگاہ اور باخبر ہیں۔“

خدا حافظی کا وقت تھا۔ ریان امام کا ایک چاہنے والا صحابی تھا۔ ایک نرم اور لطیف دل کا مالک۔ اس کی سمجھ میں نہیں آ رہا تھا کہ وہ کس طرح اپنے امام کو خدا حافظ کہہ کر ان سے جدا ہو۔ اسے ایک لمبے سفر پر جانا تھا اور شاید اسے جلدی دوبارہ امام کا دیدار نصیب نہ ہو۔

ریان نے سفر کے لئے تمام ساز و سامان تیار کر لیا تھا۔  
اپنے اونٹ کی مہارامامؑ کے ایک غلام کو پکڑائی اور کہا: اس کو  
ایک بالٹی پانی پلاؤ، میں امامؑ سے خدا حافظی کر لوں۔

ریان امام کے کمرے میں داخل ہوا۔ امام کمرے میں گویا اس کا انتظار کر رہے تھے۔ ریان کمرے میں داخل ہونے سے پہلے سوچ رہا تھا کہ خدا حافظی کے موقع پر امام سے دو چیزیں مانگوں گا۔ ایک امام کا لباس تاکہ دفن کے وقت اسے کفن کے طور پر استعمال کروں اور خدا اس لباس کے صدقے میرے گناہ معاف کر دے۔

دوسری چیز امام سے کچھ درہم مانگوں گا تاکہ اپنی بیٹی کے لئے انگوٹھی خرید سکوں اور سوغات کے طور پر اس کے لئے لے جاؤں کیونکہ خود میرے پاس انگوٹھی خریدنے کے لئے رقم نہیں ہے۔

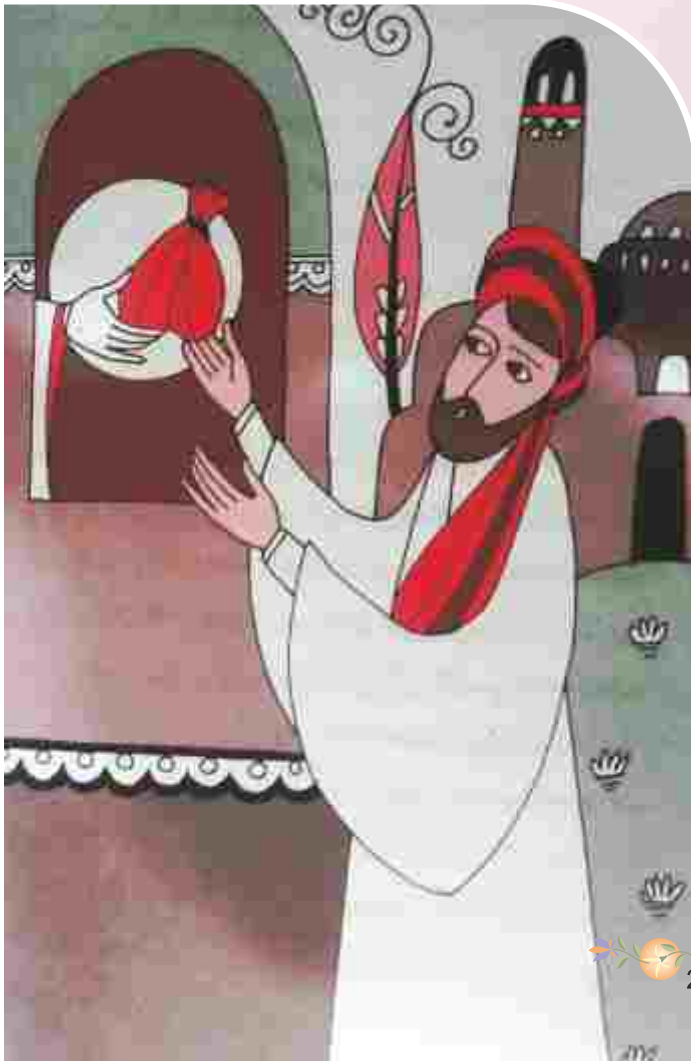
ریان اس کمرے کی دلیز پر پہنچا جہاں امام تشریف فرما تھے۔ امام اس کے استقبال کے لئے اٹھ کھڑے ہوئے۔ اس سے تیاک سے ملے اور اس کے لئے دعا فرمائی۔

خدا حافظی کے وقت بغل گیر ہوتے وقت ریان اپنے جذبات پر قابو نہ رکھ سکا اور بے ساختہ اس کی آنکھوں سے آنسو جاری ہو گئے اور اس پر شدید گریہ طاری ہو گیا۔ اس کے رونے کی آواز اتنی بلند تھی کہ امام کا ایک خدمت گزار بھی اس کی طرف



# شرمندگی کے آثار

جب وہ چلا گیا تب ایک صحابی نے حضرت سے عرض کیا: مولا آپ نے اس کو وہ رقم دروازے کے پیچھے سے کیوں عطا فرمائی؟ حضرت نے جواب دیا: ہم خاندان اہل بیت سائل کے چہرے پر کوئی چیز لیتے ہوئے جو شرمندگی کی سرخی نمودار ہوتی ہے، اس کو دیکھنا نہیں چاہتے۔



امام علی رضا علیہ السلام اپنے اصحاب کے ساتھ بیٹھے ہوئے تھے۔ سبھی اصحاب آپ کے چاروں طرف بیٹھے ہوئے تھے اور آپ سے طرح طرح کے سوالات کر رہے تھے۔ امام رضا علیہ السلام بھی ان کے سوالوں کا بہت اچھے انداز سے جواب دے رہے تھے۔ تبھی ایک مسافر حضرت امام علی رضا علیہ السلام کی خدمت میں حاضر ہوا اور امام علیہ السلام سے مخاطب ہو کر کہنے لگا: یا بن رسول اللہ میں ایک مسافر ہوں اور یہاں حج و زیارت کی نیت سے آیا تھا، حج پورا کر کے مدینہ پہنچا اب میرے پاس پیسہ ختم ہو گیا ہے، اپنے وطن جانے کے لیے کچھ بھی نہیں بچا ہے۔ اس لئے آپ کی خدمت میں حاضر ہوا ہوں۔ اگر ممکن ہو تو مجھ کو کچھ رقم قرض کے طور پر دیدیں، میں اپنے وطن پہنچ کر کسی کے ذریعہ آپ تک پہنچا دوں گا۔

حضرت امام رضا علیہ السلام اس آدمی کی باتوں کو سننے کے بعد اپنے کمرہ میں تشریف لے گئے اور دروازے کے پیچھے سے دو سو دینار کی تھیلی اس کو دی اور فرمایا: یہ رقم تیرے سفر کا خرچ ہے اور وطن پہنچ کر واپس کرنے کی ضرورت نہیں ہے۔

الْمُؤْمِنِينَ حَرَمًا وَهُوَ الْكُوفَةُ أَلَا وَإِنَّ قَمَّ الْكُوفَةِ الصَّغِيرَةَ أَلَا إِنَّ لِلْجَنَّةِ ثَمَانِيَةَ أَبْوَابٍ ثَلَاثَةٌ مِنْهَا إِلَى قَمَّ تُقْبَضُ فِيهَا امْرَأَةٌ مِنْ وَلَدِي اسْمُهَا فَاطِمَةُ بِنْتُ مُوسَى وَتَدْخُلُ بِشَفَاعَتِهَا شِيعَتِي الْجَنَّةَ بِأَجْمَعِهِمْ" "يَقِينًا" اللہ کا ایک حرم ہے جو مکہ ہے، جان لو کہ رسول اللہ کا ایک حرم ہے جو مدینہ ہے، اور جان لو کہ حضرت امیر المؤمنین کا ایک حرم ہے جو کوفہ ہے، جان لو کہ جنت کے آٹھ دروازے ہیں، ان میں سے تین تم کی طرف ہیں، اس شہر میں میری اولاد میں سے ایک خاتون کی روح قبض ہوگی اس کا نام فاطمہ بنت موسیٰ ہوگا اور اس کی شفاعت سے میرے سب شیعیہ جنت میں داخل ہوں گے۔

#### زیارت کی فضیلت

حضرت فاطمہ معصومہ سلام اللہ علیہا کے مقدس روضہ کی زیارت انسان کو مایوسی کے بھور میں ڈوبنے سے بچاتی ہے اور اس سے مزید جد و جہد کرنے کا ہمت بڑھتی ہے۔ آپ کی زیارت کے لئے بڑے عظیم ثواب کا وعدہ دیا گیا ہے، اس سلسلہ میں حضرت امام علی رضا علیہ السلام فرماتے ہیں: "مَنْ زَارَهَا فَلَهُ الْجَنَّةُ"، جو شخص حضرت فاطمہ معصومہ سلام اللہ علیہا کی زیارت کرے، اس کے لئے جنت ہے۔

حضرت امام جواد علیہ السلام فرماتے ہیں: "مَنْ زَارَ قَبْرَ عَمَّتِي بِقَمَّ فَلَهُ الْجَنَّةُ"، جو شخص میری پھوپھی کی تم میں زیارت کرے، اس کے لئے جنت ہے۔

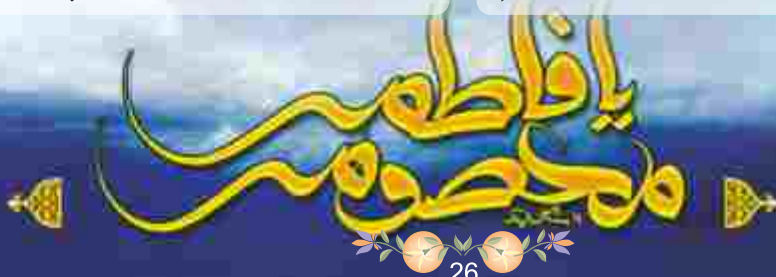
سے ملاقات اور آنحضرتؐ سے کچھ سوالات دریافت کرنے کے لئے مدینہ منورہ میں آئے۔ مگر کیونکہ حضرت امام موسیٰ کاظم علیہ السلام سفر پر تشریف لے گئے تھے، انہوں نے اپنے سوالات حضرت معصومہ سلام اللہ علیہا کو دیے جن کی عمر اس وقت چند سال تھی۔

وہ لوگ دوسرے دن امامؑ کے گھر آئے، لیکن ابھی تک آنحضرتؐ سفر سے واپس نہیں پلٹے تھے تو انہوں نے اپنے سوالات واپس لینا چاہا تا کہ اگلے سفر میں امامؑ کی خدمت میں شریاب ہوں، انہیں یہ پتہ ہی نہیں تھا کہ حضرت معصومہ سلام اللہ علیہا نے ان کے سوالات کے جواب تحریر فرما دیے ہیں، جب انہوں نے جوابات دیکھے تو بہت خوش ہوئے اور بہت شکریہ ادا کرتے ہوئے مدینہ سے چلے گئے۔

راستہ میں ان کی حضرت امام موسیٰ کاظم علیہ السلام سے ملاقات ہوئی، اپنا قصہ بیان کیا، جب آنحضرتؐ نے سوالات کے جوابوں کا مطالعہ فرمایا۔ جوابات بالکل درست تھے تو آپؐ نے تین بار ارشاد فرمایا: "فداها ابوہا"، فاطمہ معصومہ پر ان کے والد فدا ہوں۔

#### فضائل و کمالات کی بلندی

حضرت فاطمہ معصومہ سلام اللہ علیہا فضائل و کمالات کی بلندی پر فائز ہیں۔ حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام ارشاد فرماتے ہیں: "إِنَّ لِلَّهِ حَرَمًا وَهُوَ مَكَّةُ أَلَا إِنَّ لِرَسُولِ اللَّهِ حَرَمًا وَهُوَ الْمَدِينَةُ أَلَا وَإِنَّ لِأَمِيرِ



السلام علیہا  
یا فاطمہ المعصومہ

## حضرت فاطمہ معصومہ سلام اللہ علیہا

وطہارت، زہد و عبادت اور تقوا و صداقت سے لبریز ہے۔

معصومہ

معصوم اس شخص کو کہا جاتا ہے جو گناہ اور غلطی سے پاک ہے۔ اللہ تعالیٰ نے معصوم ہستیوں کو ایسا علم عطا فرمایا ہے جس کے سبب، وہ گناہ اور غلطی نہیں کرتے، لہذا معصوم ہستیوں سے کسی قسم کا گناہ سرزد نہیں ہوتا نہ صغیرہ نہ کبیرہ۔

آپ کو "معصومہ" کا لقب آپ کے بھائی آٹھویں امام حضرت امام علی رضا علیہ السلام نے عطا فرمایا۔ جس روایت میں آنحضرتؐ نے فرمایا: "مَنْ زَارَ الْمَعْصُومَةَ بِقَمِّ كَمَنْ زَارَنِي"، جو شخص معصومہ کی قم میں زیارت کرے، اس شخص کی طرح ہے جس نے میری زیارت کی۔

آپ کو حجت خدا اور خلیفہ الہی نے "معصومہ" کا لقب دیا ہے، اس فرمان سے اس بات کی نشاندہی ہوتی ہے کہ آپ معصومہ ہیں۔

حضرت معصومہ سلام اللہ علیہا علم کا سرچشمہ

ایک دن کچھ شیعہ حضرت امام موسیٰ کاظم علیہ السلام

حضرت فاطمہ معصومہ سلام اللہ علیہا شہر مدینہ میں پیدا ہوئیں۔ آپ کے والد ساتویں امام، حضرت امام موسیٰ کاظم علیہ السلام ہیں۔ جناب نجمہ خاتون آپ کی اور آٹھویں امام حضرت امام علی رضا علیہ السلام کی والدہ گرامی ہیں۔ آپ نویں امام حضرت امام محمد تقی علیہ السلام کی پھوپھو ہیں۔ دوسرے لفظوں میں آپ کا تین طرف سے ائمہ طاہرین علیہم السلام سے رشتہ ہے، امام کی بیٹی، امام کی بہن اور امام کی پھوپھی۔

آپ نے ابتداء ہی سے ایسے ماحول میں پرورش پائی جس میں اخلاق، عبادت، زہد، تقوا، صداقت، صبر، مشکلات کو برداشت کرنا، لوگوں کو عطا کرنا اور اللہ کو یاد کرنا، اس پاک سیرت خاندان کی عظیم صفات میں سے ہیں۔ اس خاندان کے آباء و اجداد، ہدایت کرنے کے لئے منتخب پیشوا اور امامت کے جگہ گاتے ہوئے گوہر اور انسانیت کی کشتی کے سربراہ ہیں۔ اب ایسے نیک کردار اور باکمال خاندان میں تربیت یافتہ خاتون کا مقام کتنا بلند ہونا چاہیے جس کا دامن علم



میں زیادہ خوش ہونے والا اٹی سیدھی حرکتیں شروع کر دیتا ہے اور خوشی کے مارے ناچنے کودنے لگتا ہے۔ جیسا کہ اکثر شادیوں میں دیکھا جاتا ہے کہ ان کے یہاں خوشی منانے کا طریقہ یہی ہے کہ زور سے میوزک بجایا جائے اور خود بھی ناچ گانے میں لگ جائیں۔ مگر جنت میں ہر طرح کی خوشی تو ہوگی مگر کوئی غلط بات نہ ہوگی۔ یہاں فضول یا جھوٹی بات نہ ہوگی۔ وہ جنت ہے۔ اسی طرح ہم بھی اپنے گھر اور اسکول مسجد اور مدرسہ کو غلط باتوں سے پاک کر کے جنت بنا سکتے ہیں۔

دوسرے یہ جنت میں کوئی بھی ایک دوسرے کو نہیں جھٹلائے گا۔ کیونکہ پہلی بات تو یہ کہ وہاں سب سچے ہونگے اور جب سچ بولیں گے تو سب کو ایک دوسرے پر اعتبار ہوگا۔ ذرا سوچو! کیا ہم سب بھی ایک دوسرے پر اعتبار کرتے ہیں۔ کیا ہم جنت والوں کی طرح سچے نہیں بن سکتے؟ جو جتنا زیادہ اچھا نیک انسان ہوگا اسے جنت میں اتنی ہی زیادہ نعمتیں حاصل ہوں گی۔

جب انہیں اللہ کی آیتیں سنائی جاتی تھیں تو ان کو جھٹلاتے تھے۔

ان کے سارے کروت ایک کتاب میں جمع کر دئے گئے ہیں (اور وہ مٹنے والے نہیں ہیں)

کیونکہ جب بھی کوئی انہیں اچھی باتیں بتاتا وہ اسے جھٹلاتے تھے اسی لئے ان کے عذاب میں اس حساب سے اضافہ ہوتا رہے گا۔

آئے اب دیکھتے ہیں کہ جنت والوں کو کیا کیا ملے گا؟

۱۔ کامیابی کی منزل

۲۔ باغات اور انگور

۳۔ نوجوان حوریں جو ہم سن ہوں گی۔

۴۔ بہشتی شربت کے چھلکتے ہوئے جام۔

۵۔ کانوں میں کوئی غلط آواز نہ آئے گی۔ (اس لئے کہ

جب سب اچھی باتیں کریں گے تو غلط آواز کیسے آئے گی)

دوسرے یہ کہ جنت کی نعمت سے انسان ہیکے گا نہیں جیسے دنیا

### الفاظ کے معنی:

أَحْقَاب: زمانہ (عقب کی جمع۔ ایک عقب ساٹھ یا باسٹھ سال کے برابر ہوگا اور اس کا ایک دن دنیا کے ایک ہزار سال کے برابر ہوگا۔ یعنی ایک سال تین لاکھ پینسٹھ ہزار سال کے برابر۔ اور ساٹھ سال یعنی دنیا کے دو کروڑ انیس لاکھ سال کے برابر ہوں گے۔)

طاغین: حد سے زیادہ گناہ کرنے والے۔ مناب: آخری ٹھکانا، واپسی کی جگہ۔ لابئین: رہنے والے۔

لایذوقون: نہیں چکھیں گے۔ حمیم: کھولتا ہوا پانی غساق: زخم سے بہنے والی پیپ وقافا: غلطی کے مطابق

کذابا: واضح تکذیب احصاء: گننا اعناب: انگور، عنب کی جمع مفاز: کامیابی کی جگہ

کواعب: نوجوان حوریں اتراب: ہمسن کاس: جام دھاق: چھلکتا ہوا لغو: فالتو

# تفسیر قرآن

## سورہ نباء (۴۱)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

ہماری آیات کی باقاعدہ تکذیب کی ہے (29) اور ہم نے ہر شے کو اپنی کتاب میں جمع کر لیا ہے (30) اب تم اپنے اعمال کا مزہ چکھو اور ہم عذاب کے علاوہ کوئی اضافہ نہیں کر سکتے (31) بیشک صاحبانِ تقویٰ کے لئے کامیابی کی منزل ہے (32) باغات ہیں اور انگور (33) نوخیز دوشیزائیں ہیں اور سب ہمسرن (34) اور چھلکتے ہوئے پیمانے (35) وہاں نہ کوئی لغوبات سنیں گے نہ گناہ (36) یہ تمہارے رب کی طرف سے حساب کی ہوئی عطا ہے اور تمہارے اعمال کی جزا۔

### تفسیر:

دلیلوں کے ساتھ یہ واضح کرنے کے بعد کہ قیامت کا دن ضرور آئے گا پروردگار عالم نے یہ بھی بتا دیا کہ وہاں کیا کیا ہوگا۔  
۱۔ جہنم گنہگاروں اور کافروں کی تاک میں ہوگی اور انہیں اپنی طرف کھینچ لے گی اور وہ اس سے نہیں بچ پائیں گے۔  
۲۔ وہ اس کے اندر بہت زمانہ تک رہیں گے۔ (یعنی جب انکی سزا پوری ہو جائے گی تو وہ جنت بھیجے جائیں گے)  
۳۔ وہاں انہیں نہ ٹھنڈک نصیب ہوگی اور نہ کوئی پینے کی چیز ملے گی۔ (جس سے وہ پیاس بجھائیں گے)  
۴۔ انہیں پینے کے لئے کھولتا ہوا گرم پانی اور پیپ (جو زخم کے اندر سے گندہ خون نکلتا ہے) دیا جائے گا۔ یہ انہیں کیوں دیا جائے گا؟  
- اس لئے کہ وہ قیامت کے حساب و کتاب کی امید ہی نہیں رکھتے تھے۔

لِلطَّاعِينَ مَأْبًا (۲۲) لَا يَتَّبِعِينَ فِيهَا أَحْقَابًا (۲۳) لَا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَلَا شَرَابًا (۲۴) إِلَّا حَمِيمًا وَغَسَّاقًا (۲۵) جزاء وفاقاً (۲۶) إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ حِسَابًا (۲۷) وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذْبًا (۲۸) وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَىٰ نَاهُ كِتَابًا (۲۹) فَذُوقُوا فَلَنْ نَزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا (۳۰) إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا (۳۱) حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا (۳۲) وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا (۳۳) وَكَأْسًا دِهَاقًا (۳۴) لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذْبًا (۳۵) جزاء من رَبِّكَ عطاءً حِسَابًا (۳۶)

### ترجمہ:

(22) وہ سرکشوں کا آخری ٹھکانا ہے (23) اس میں وہ مدتوں رہیں گے (24) نہ ٹھنڈک کا مزہ چکھ سکیں گے اور نہ کسی پینے کی چیز کا (25) علاوہ کھولتے پانی اور پیپ کے (26) یہ ان کے اعمال کا مکمل بدلہ ہے (27) یہ لوگ حساب و کتاب کی امید ہی نہیں رکھتے تھے (28) اور انہوں نے

# اَلسَّلَامُ عَلَیْكُمْ



## فہرست

- (۱) تفسیر
- (۲) حضرت فاطمہ معصومہ سلام اللہ علیہا
- (۳) شرمندگی کے آثار
- (۴) خوشبو والا لباس
- (۵) میری آپ بیتی
- (۶) دین کی قیمت
- (۷) جیسی کرنی ویسی بھرنی
- (۸) لطفے
- (۹) خوش قسمت تاجر

جو لوگ ایمان لائے اور انہوں نے نیک اعمال کئے ان کے لئے ”طوبی“ (بہشت) اور بہترین وارثت ہے



اگست ۲۰۱۶ء

جلد-۶، شمارہ-۹

یادگار:

خادم دین و ملت مولانا محمد علی آصف طب ثراہ

مجلس ادارت:

مولانا تصدیق حسین صاحب مولانا سعید الحسن صاحب مولانا کمیل اصغر صاحب

مدیر:

سید منظر صادق زیدی

نائب مدیر: سید محمد سبطین باقری

ترنین و آرائش: imagine  
We Fix Imagination  
9839099435

سالانہ زراعت: ۳۰۰ روپے

ناشر: ہدی مشن

موضع غازی پور، ڈاکخانہ گوگوان، ضلع مظفرنگر

یو پی انڈیا ۲۳۷۷۷۳، فون: 09927754886، 09890500072

برانچ آفس: شفاعت مارکیٹ زہرا کالونی، مفتی گنج، لکھنؤ-۳

Mob.: 09415090034, 09451085885

E-mail: tubamonthly@gmail.com





♦ कुर्आन ♦ अहलेबैत (अ.स.) ♦ हदीस ♦ अक़ायद ♦ महदवीयत ♦ अख़लाक़ ♦ मानव अधिकार ♦ पर्दा ♦ स्वास्थ्य ♦ हज  
♦ रमज़ान ♦ मोहर्रम..... और देश विदेश की ताज़ा ख़बरें ♦ ख़बरों का विश्लेषण ♦ टिप्पणी  
साक्षात्कार और बहुत कुछ जानने के लिए।

## हस्तवीर रिपोर्ट



♦ दाइश के डर से दक्षिणी  
हज़ार कुर्दे सीरियाईको का  
पलायन।

© अहमद २०, २०१५, १०:०० ई.स.



♦ पैश ज़ारी लैज़िक ब्रती के  
साथ कंधे से कंधा मिलाकर  
दुआ की महिलाएँ भी मैदान  
में।

© अहमद २०, २०१५, १०:०० ई.स.

## वीडियो



♦ अरब देशों के बच्चों के  
खेल पर दाइश के अपराधी  
का असर। VIDEO

♦ सऊदी अरब ने  
मज़लायासियों को क़पल के  
रूप में पहुँचाई सहायता।  
CARTOON

© टिप्पणी २०, २०१५, १०:०० ई.स.



♦ मज़ला पर हवाई हमले  
और इस्लामिक सीरिया।  
CARTOON

© टिप्पणी २०, २०१५, १०:०० ई.स.

## सांस्कृतिक

१ अहलेबैत (अ.स.)

२ दिना सन्तुलन का

परिचय

३ टिप्पणी

४ साक्षात्कार

५ रिपोर्ट

## मुख्य समाचार



यहूदा की ज़रूरीता राख़धान रहे और  
धर्मियों को जाक़ब का दे।

अमेरिका ही दाइश को हथियार  
उपलब्ध करता है।

आईएसआईएल से निपटने के लिए  
सभी देशों से इराक़ की अपील

आबतुल्लाह नूरी हमेशा ही ने  
मुसलमानों के साथ एकता पर बात  
दिया

## हिंदुस्तान



♦ आईएसआईएल से लोहा लेने वाले भारतीय छात्र का शव  
स्वागत

♦ कश्मीर में आईएसआईएल के फ़ंडे बहुराज ज़ाबो से चिंता

♦ ईरान ने गज़ना, इराक़, सीरिया, और कश्मीर के लिए भेजी  
सहायता

♦ भारत में अमरीकी गठबंधन में शामिल होने से किताब इंसान

♦ अलक़ायदा खोलेगा भारतीय उपमहाद्वीप में अपनी नई  
शाखा।

♦ भारतीय सुन्नी मौलाना शीख अब्दुल अहमद का दाइश के  
खिलाफ़ सचट फतवा।

♦ भारत में 4 हवाई अड्डों पर हवाईअल्टे जाही

एवर टूटिंगा के गिरान में आलगाती हुनके की आवाज़ से  
आलगावाद, लुई, कोलकाता और कोरिया एयरपोर्ट पर  
हवाईअल्टे जाही किया

## ISLAMIC COUNTRIES



♦ आईएसआईएल से निपटने के लिए सभी देशों से इराक़ की  
आपेल

♦ कोष्टा में शीर्षों के ज़ातीय सफ़ाक के खिलाफ़ हड़ताल

♦ आबतुल्लाह नूरी हमेशा ही ने मुसलमानों के साथ एकता पर  
बात दिया

♦ सीरियाई सेना ने मोर्के मज़र पर नियंत्रण कर लिया

दुआगी सुन्नी मौलाना

♦ दाइश का सुन्नीयों से कोई संबंध नहीं है।

♦ अपने अभिभावकों पर चढ़ दीये हैं आलंकी,

♦ सीरिया, क़ुबानी में फ़डपे जारी, आलंकीयों को भारी  
हथियार

सीरिया के उत्तरी लज़र क़ुबानी में आलंकीयों की भारी  
हथियार उठाती पड़ी है।

## मध्यपूर्व समाचार



♦ मिड में सऊदी अरब के खिलाफ़ आज़ादी

♦ इराक़ के पास २०० से अधिक परमाणु बार हेइस मौजूद हैं

♦ फ़ेल टीवी की विचोर्टर की लंदिग़ मील, तुर्की का हथ होले की  
आलंका।

♦ यमन, ताज़ा फ़डपे में २० हौली लज़ाके इलाहूत

♦ कस ने अमरीका की दिखाया आईना।

## अंतिम समाचार

## अधिक देखें

## सांस्कृतिक

♦ ज़मैनी में आबतुल्लाह शीख लस के सलठेन में  
प्रदर्शन।

© अहमद २०, २०१५, १०:०० ई.स.

♦ बहरीज की ज़रूती सावधान रहे और धर्मियों को  
सावधान बना दे।

© अहमद २०, २०१५, १०:०० ई.स.

मालाउद ज़ाबोरी

♦ अमेरिका ही दाइश को हथियार उपलब्ध करता है।

© अहमद २०, २०१५, १०:०० ई.स.

♦ ईरान, आलंकीय के विरुद्ध सफ़र में लैज़ीय देशों से  
सहयोग को तैयार

© अहमद २०, २०१५, १०:०० ई.स.

♦ सीरिया, पाक आलंकीयों का उपचार, इराक़ में  
आलंकीयों का उपचार

© अहमद २०, २०१५, १०:०० ई.स.

♦ सीरिया, क़ुबानी में फ़डपे जारी, आलंकीयों को भारी  
हथियार

© अहमद २०, २०१५, १०:०० ई.स.

♦ पाकिस्तान के साथ सीमा पर कोई फ़डपे नहीं  
ईरानी कमान्डर

© अहमद २०, २०१५, १०:०० ई.स.

♦ इराक़ी सेना की कमान्डरी में दक्षिणी आलंकीयों की  
हथियार

© अहमद २०, २०१५, १०:०० ई.स.

♦ भारत में 4 हवाई अड्डों पर हवाईअल्टे जारी

© अहमद २०, २०१५, १०:०० ई.स.

♦ मिड में सऊदी अरब के खिलाफ़ आज़ादी

© अहमद २०, २०१५, १०:०० ई.स.

♦ वीख निम को फ़ाली का आदेश हीर कानूनी  
आबतुल्लाह किरमानी

© अहमद २०, २०१५, १०:०० ई.स.

♦ आईएसआईएल से निपटने के लिए सभी देशों से  
इराक़ की अपील

© अहमद २०, २०१५, १०:०० ई.स.

♦ कोष्टा में शीर्षों के ज़ातीय सफ़ाक के खिलाफ़  
हड़ताल

© अहमद २०, २०१५, १०:०० ई.स.

♦ इराक़ के ज़ातीय सफ़ाक में (BA) से ज़ावादा तकलीफ़ी  
आलंकीयों की डेर।

© अहमद २०, २०१५, १०:०० ई.स.

♦ इराक़ के ज़ातीय सफ़ाक के खिलाफ़ आज़ादी

© अहमद २०, २०१५, १०:०० ई.स.

♦ इराक़ के ज़ातीय सफ़ाक के खिलाफ़ आज़ादी

© अहमद २०, २०१५, १०:०० ई.स.

# طوبی

ماہنامہ

اگست ۲۰۱۶ء

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى  
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ  
وَعَلَى آلِهِ  
وَحَبَرَةِ بَيْتِهِ  
وَالْحَمْدُ لِلَّهِ

